मनुष्य क्या है?

अध्याय
एक

आरम्भ में

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2016 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. सृष्टि.....2

क. बाइबल आधारित वृतान्त 3

ख. ऐतिहासिकता 4

1. उत्पत्ति 5
2. पुराना नियम 5
3. नया नियम 6

ग. श्रेष्ठता 7

III. बनावट.....9

क. भौतिक शरीर 9

ख. अभौतिक आत्मा 11

1. उदगम 12
2. अमरत्व 13
3. त्रि-भागी 13

IV. वाचा.....15

क. ईश्वरीय परोपकारिता 17

ख. मानवीय निष्ठा 18

1. याजकीय दायित्व 19
2. राजकीय दायित्व 20

ग. परिणाम 21

V. सारांश.....23

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मनुष्य क्या है?

अध्याय एक

आरम्भ में

परिचय

क्या आप कभी किसी चलती हुई वार्तालाप के मध्य में पहुँचे हैं? या फिर पहले से ही आरम्भ हो चुके किसी नाटक के मंचन के मध्य में पहुँचे हैं? या किसी खेल के आयोजन में आप देर से पहुँचे हैं? ठीक है, यदि ऐसा हुआ है, तो आप समझ सकते हैं कि यदि हम आरम्भ की कुछ बातों को नहीं जानते हैं, तो यह बहुत ही अधिक उलझन भरा हो सकता है। जब हम यह नहीं जानते हैं कि कहानी का आरम्भ कैसे हुआ, तो हमें यह समझने में परेशानी होती है कि क्यों कुछ बातें महत्वपूर्ण हैं, नायक कौन है और खलनायक कौन है, और कहानी का सार बिन्दु क्या है। कुछ इसी तरह का सत्य तब पाया जाता है जब हम मानव जाति के ऊपर विचार करते हैं। यह जानना कि हम कैसे यहाँ तक पहुँचे हैं, कैसे हमारी परिस्थितियाँ यहाँ तक पहुँची हैं, और हमें क्या करना चाहिए तो यह हमें हमारे जीवन के विवरणों को समझने और इसका प्रबन्धन करने में बहुत अधिक सहायतापूर्ण होता है।

यह *मनुष्य क्या है?*, के ऊपर हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक, "आरम्भ में" से दिया है। इस अध्याय में, हम यह देखेंगे कि उस समय मनुष्य कैसा था जब परमेश्वर ने सबसे पहले हमारी सृष्टि की थी, और हमें अदन की वाटिका में रख दिया था। इस श्रृंखला का शीर्षक – *मनुष्य क्या है?*– अधिकांश मसीही विश्वासियों को परिचित होना चाहिए, क्योंकि यह पवित्रशास्त्र में कई बार प्रगट होता है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 8:4 कहता है कि:

> **तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? (भजन संहिता 8:4)।**

प्रत्येक बार बाइबल के पात्रों या लेखकों ने यह पूछा है कि, "मनुष्य क्या है?" वे मनुष्य के स्वभाव के बारे में चकित थे। वे ऐसी बातें जानना चाहते थे जैसी: परमेश्वर के साथ हम सम्बन्ध में कौन हैं, पृथ्वी पर हमारी भूमिका क्या है, और किस तरह की नैतिक क्षमताएँ हमारे पास में हैं। इन बातों को औपचारिक धर्मवैज्ञानिक शब्दावली की भाषा में कहना, वे "नृविज्ञान" अर्थात् मानव-विज्ञान के बारे में प्रश्न पूछ रहे थे। शब्द "मानव-विज्ञान" यूनानी भाषा के दो मूल शब्दों से आता है: *आन्थ्रोसपोस* जिसका अर्थ "मानव" या "मानवीय प्राणी"; से है और *लोगोस* जिसका "अर्थ" अध्ययन से है। इस तरह मानव-विज्ञान का अर्थ हुआ:

> **मानव का अध्ययन**

और धर्मविज्ञान के विषय में:

> **मानव का धर्मसिद्धान्त**

सांसारिक अध्ययन में, "नृविज्ञान" का ध्यानाकर्षण समाज, संस्कृति, जीवविज्ञान और मानव जाति के विकास की जैसी बातों के ऊपर केन्द्रित होता है। परन्तु धर्मवैज्ञानिक नृविज्ञान में यह बहुत ही संकीर्ण है। लुईस ब्रकोख़, जो 1873 से 1957 में रहे, ने इसकी परिभाषा अपनी पुस्तक *विधिवत् धर्मविज्ञान* के अध्याय 1 के भाग 2 में इस तरह से दी है:

> **धर्मवैज्ञानिक नृविज्ञान का सरोकार जिनके विषय में बाइबल कहती है कि केवल मनुष्य के सम्मान और उस सम्बन्ध से है जिसमें वह परमेश्वर के सामने खड़ा होता और जिसमें उसे होना चाहिए।**

दूसरे शब्दों में, जब बात धर्मविज्ञान की आती है, तब नृविज्ञान का अध्ययन *स्वयं* मनुष्य और परमेश्वर के साथ उसके *सम्बन्ध* के अध्ययन में पाया जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मनुष्य जैसा कि आरम्भ में था के ऊपर हमारा यह अध्याय तीन भागों मे विभाजित होगा। पहले, हम मनुष्य की सृष्टि के ऊपर देखेंगे। दूसरा, हम हमारे प्राणों के संयोजन अर्थात् बनावट का वर्णन करेंगे। और तीसरा, हम परमेश्वर के साथ आरम्भिक मानवीय वाचा को देखेंगे। आइए मानवता की सृष्टि के साथ आरम्भ करें।

सृष्टि

प्राचीन निकट पूर्व में, जहाँ पर मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक को लिखा था, सृष्टि रचना सम्बन्धित कथाएँ अत्यन्त ही महत्वपूर्ण थीं। बाइबल की बाहरी संस्कृतियों में, सृष्टि से सम्बन्धित कथाओं ने विशेष रूप से वर्णन दिया कि अपने आदर्श रूप में संसार को किस तरह का होना चाहिए था। उन्होंने वर्णित किया कि कैसे देवताओं ने मौलिक रूप में संसार को कार्य करने की मंशा की थी, और इसमें सृजे हुए प्राणियों के करने के लिए विभिन्न भूमिकाओं को निर्धारित किया था। और पवित्रशास्त्र भी सृष्टि की रचना किए जाने के वृतान्त का इसी तरह से उपयोग करता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि प्राचीन इस्राएल के चारों ओर पाई जाने वाली संस्कृतियों में, सृष्टि की कहानियाँ झूठी थीं। उन्होंने सृष्टि के कार्यों के लिए झूठे देवताओं को जिम्मेदार ठहराया। और उन्होंने अपनी अविष्कृत कहानियों को अनुचित सामाजिक और राजनैतिक ढांचे को, और मनुष्य और अन्य प्राणियों के मध्य के सम्बन्ध को ऐंठन के लिए बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया।

इसकी विपरीत, बाइबल सृष्टि की सच्ची कहानी को इस बात से सम्बन्धित करती है कि कैसे मनुष्य वास्तव में इस संसार के भीतर कार्य करने के लिए निर्मित किया गया था। इसी कारण बाइबल के बहुत से अन्य भाग सृष्टि की रचना के वृतान्त का उपयोग यह प्रमाणित करने के लिए करते हैं कि कैसे संसार को कार्य करना चाहिए और वह कौन सी भूमिकाएँ हैं जिन्हें करने के लिए मनुष्य नैतिक रूप से बाध्य है। धर्मशास्त्री अकसर इन दायित्वों को "सृष्टि का अध्यादेश" कह कर पुकारते हैं क्योंकि वे:

ऐसे नैतिक दायित्व हैं जिन्हें परमेश्वर के सृष्टि के कार्यों के द्वारा स्थापित किया गया है।

विचार यह है कि परमेश्वर के कार्य पूर्ण हैं, और इसलिए, वह हमारे अपने व्यवहार के मापदण्ड हैं।

कई बार सृष्टि के अध्यादेश बहुत ही अधिक स्पष्टता से मिलते हैं, जैसे कि उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर की आज्ञा "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ।" परन्तु अन्य समयों में अस्पष्ट हैं, जैसे कि सब्त के दिन को पवित्र रखने का हमारा दायित्व। सृष्टि के वृतान्त स्पष्टता से यह नहीं कहते हैं कि मनुष्य को प्रत्येक सातवें दिन आराम करना चाहिए। परन्तु निर्गमन 20:11 में दी हुई, दस आज्ञाओं में, मूसा परमेश्वर के छ: दिन कार्य करने और सातवें दिन आराम की पद्धति को स्पष्ट करता है जिसने मनुष्य को भी ऐसा ही करने के लिए बाध्य किया। इसलिए, जब हम मनुष्य की भूमिका और विशेषता के बारे में सोच विचार करते हैं, तो हमारे लिए सृष्टि से आरम्भ करना दोनों अर्थात् स्वाभाविक और सहायतापूर्ण होगा।

हम मनुष्य की सृष्टि की खोज तीन चरणों में करेंगे। प्रथम, हम बाइबल आधारित सृष्टि के वृतान्त को सारांशित करेंगे। दूसरा, हम आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता के ऊपर विचार करेंगे। और तीसरा, हम परमेश्वर के सृजे हुओं में उनकी श्रेष्ठता को देखेंगे। आइए सबसे पहले बाइबल आधारित वृतान्तों से आरम्भ करें।

बाइबल आधारित वृतान्त

उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि के दो वृतान्त मिलते हैं। उत्पत्ति 1:1-2:3, में पहला और उत्पत्ति 2:4-25 में दूसरा मिलता है। यह दोनों वृतान्त मिलकर हमें एक सामान्य चित्र को देते हैं कि कैसे और क्यों परमेश्वर ने हमारी सृष्टि की।

> **मैं सोचता हूँ कि, उत्पत्ति 1 और 2 के सृष्टि के वृतान्त वास्तव में एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि वे एक ही वास्तविकता को देखते हैं – वे सबसे पहले मानवीय संस्कृति को देखते हैं जिसे परमेश्वर ने रचा है जिसमें केवल दो ही प्राणी उस समय रह रहे थे – यह उनकी संस्कृति को दो भिन्न पहलूओं से देखता है। ...यह सत्य है, हमारे पास अध्याय 1 में सृष्टि की कहानी मिलती है, और यह पूरी प्रक्रिया के बारे में बोलती है, परन्तु हमारे पास यह सृष्टि के 6 दिनों की एक खिड़की के जैसे है जबकि मनुष्य के जीवन के बारे में अध्याय 2 में मिलता है, अध्याय 2 के आरम्भ में मिलता है, और यह और अधिक एक दूसरे के साथ उनके**

सम्बन्धों के बारे में वास्तव में बात करता है। और इस तरह से हम इन दोनों के बारे में एक ही चित्र को दो भिन्न समयों पर फिल्मांकित किए हुए पाते हैं, और हमें उन्हें पढ़ने के लिए सक्षम होना चाहिए और आवश्यक रूप से उनके विरोधाभासों को नहीं देखना चाहिए, परन्तु मैं सोचता हूँ कि हम वहाँ पर घटित होती वास्तविक पूरकता और सम्पन्नता को देखते हैं।

- डॉ. मार्क साऊसी

उत्पत्ति 1:2 में दिए हुए, सृष्टि के पहले वृतान्त में, हमें कहा गया है कि सृष्टि मूल रूप से "बेडौल और सुनसान" पड़ी हुई थी। तत्पश्चात्, बाकी के बचे हुए अध्याय में, हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड सृजन और इसे भरने में छ: दिनों को बिताया।

प्रथम तीन दिन के दौरान, उसने इसके बेडौल होने के तथ्य का निपटारा इसकी बेडौलता को विभिन्न लोकों के निर्माण में आकार देने के द्वारा किया। प्रथम दिन, उसने उजियाले को अन्धकार से अलग किया। दूसरे दिन, उसने आकाश और नीचे के जल को ऊपर के जल से अलग करने के लिए इनमें वातावरण बना कर इनका निर्माण किया। तीसरे दिन, उसने समुद्र को सूखी भूमि से अलग किया।

अगले तीन दिनों के दौरान उसने इस तथ्य का निपटारा किया कि सृष्टि सुनसान पड़ी थी। चौथे दिन, उसने आकाश की ज्योतियों, जैसे सूरज और तारों को बना कर, उसने दिन और रात को अलग कर दिया। पाँचवें दिन, उसने आकाश में पक्षी और महासागर में समुद्री जीवों को रख दिया। छठे दिन, उसने सारी सूखी भूमि को सभी तरह के पशुओं के साथ भर दिया। और उसने अपने बदले में सारी सृष्टि के ऊपर राज्य करने के लिए मनुष्य की रचना की। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:27-38 में पढ़ते हैं:

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो- फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-38)।

बाइबल आधारित वृतान्त के इस स्थान पर, मनुष्य को स्पष्ट रूप से बाकी की सृष्टि से अलग कर दिया गया है। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया था, उसे अन्य प्राणियों के ऊपर शासन करने का अधिकार दिया गया था। हम इसके बारे में और अधिक विस्तार से बाद में चर्चा करेंगे। परन्तु अभी के लिए, हम केवल इतना ही ध्यानाकर्षित करना चाहते हैं कि न केवल मनुष्य सृष्टि का *भाग* था; अपितु यह इसके शिखर पर भी था।

उत्पत्ति 2:4-25 में, सृष्टि के वृतान्त के दूसरे भाग में, छठे दिन से सम्बन्धित परमेश्वर के कार्यों के और अधिक वर्णन मिलते हैं, जब उसने भूमि, पशुओं और मनुष्य की रचना की। यहाँ पर, हमें कहा गया है कि परमेश्वर ने पशुओं की रचना पृथ्वी की मिट्टी के गारे से की। और उसने प्रथम पुरूष, आदम, की रचना भी बहुत कुछ उसी तरीके से, पृथ्वी की मिट्टी के गारे से उसके शरीर को बनाते हुए की। परन्तु, यह ध्यान देना रूचिपूर्ण है कि केवल आदम के लिए ही कहा गया है कि उसने अपने श्वास को परमेश्वर के द्वारा फूँके गए श्वास से प्राप्त किया।

अगला कदम, पशुओं को आदम के सामने लाया गया, ताकि आदम अपने लिए एक उपयुक्त सहायक को प्राप्त करने का प्रयास करे – ऐसा सहायक जो उसकी सहायता उन कार्यों में करे जिसे परमेश्वर ने उसके करने के लिए नियुक्त किया था। इस प्रक्रिया के दौरान, उसने पशुओं के नाम, अपने अधिकार को उनके ऊपर प्रदर्शित करते हुए रख दिये। यह बात कोई आश्चर्य प्रगट नहीं करती है, उनमें से कोई भी उसके लिए उपयुक्त सहायक के रूप में नहीं निकला।

इस कारण, आदम को सहायक देने के लिए, जिसकी उसे आवश्यकता थी, परमेश्वर ने प्रथम स्त्री, हव्वा, की रचना आदम की पत्नी होने के लिए की। परन्तु मिट्टी के गारे से रचने की अपेक्षा, परमेश्वर ने हव्वा की रचना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आदम की पसली में से की। इसने हव्वा को परमेश्वर के द्वारा रचे हुए सभी प्राणियों में सबसे विशेष बना दिया। जैसा कि आदम ने उत्पत्ति 2:23 में कहा है कि:

इसलिए इसका नाम "नारी" होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है (उत्पत्ति 2:23)।

नामकरण का कार्य आदम का उसकी पत्नी के ऊपर अधिकार होने को प्रदर्शित करता है। परन्तु जिस नाम को उसने उसे दिया वह इब्रानी भाषा में - *ईशा* है, जिसे हमें "नारी" के शब्द से भाषान्तरित करते हैं, जो आदम के अपने नाम – *ईश*, जिसे हम "नर" के शब्द से भाषान्तरित करते हैं, जैसा ही सुनाई पड़ता है।

इन नामों की तुल्यता का निहित अर्थ यह है कि जबकि उनके विवाह में हव्वा आदम के अधिकार के अधीन थी, वह उन कार्यों के लिए बराबरी के स्थान पर थी जिन्हें परमेश्वर ने एक जाति के रूप में उन्हें करने के लिये नियुक्त किया था। दोनों ही परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे। दोनों ही को पृथ्वी को भरना और इसके अपने अधीन करना था। और दोनों ही को परमेश्वर की ओर से उसके बदले में सृष्टि के ऊपर शासन करने का अधिकार दिया गया था।

बाइबल आधारित मनुष्य की सृष्टि के इन वृतान्तों को अपने ध्यान में रखते हुए, आइए हम आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता, या ऐतिहासिक प्रामाणिकता की ओर मुड़ें।

ऐतिहासिकता

अभी हाल के वर्षों में, कई धर्मशास्त्रियों ने मनुष्य की सृष्टि के बाइबल आधारित वृतान्तों को तथ्यात्मक इतिहास होने की अपेक्षा, रूपक या उपमाओं के रूप में माना है। परन्तु स्वयं पवित्रशास्त्र का एक अलग ही दृष्टिकोण है। बाइबल के कई अन्य संदर्भों के अनुसार, आदम और हव्वा वास्तविक लोग थे। अपनी सृष्टि के समय में, वही केवल इस ग्रह के ऊपर मनुष्य थे। परन्तु वे वास्तविक वंश को उत्पन्न करने लगे, जिन्होंने अन्ततः मानव जाति में गुणन किया, जैसा कि आज हम जानते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आदम और हव्वा ऐतिहासिक लोग थे। इसी तरह से बाइबल में इसका विवरण मिलता है, और हम बाइबल में विश्वास करते हैं क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से प्रेरित है। जब हम इस संसार और इतिहास को समझते हैं, तब हम पुरातत्व विज्ञान, ऐतिहासिक दस्तावेजों, और सभी तरह के वृतान्तों जो हमारे पास विभिन्न परम्पराओं से आए हैं, का उपयोग कर सकते हैं, परन्तु सबसे सुदृढ़ आधार जिस पर हम आदम और हव्वा के ऐतिहासिक लोगों का होना प्रमाणित कर सकते हैं वह यही विश्वास है, जिसे बाइबल ने हमें बताया है।

- रेव्ह. झिआओजुन फैंग, अनुवादित

आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को दिखाने के लिए, आइए हम बाइबल आधारित साक्षी की तीन लड़ियों को देखें। सर्वप्रथम, हम स्वयं उत्पत्ति के विस्तृत संदर्भ के ऊपर ध्यान देंगे। दूसरा, हम उत्पत्ति से आगे पुराने नियम की पुस्तकों को देखेंगे। और तीसरा, हम नए नियम को देखेंगे। आइए स्वयं उत्पत्ति के विस्तृत संदर्भ से आरम्भ करें।

उत्पत्ति

उत्पत्ति 2-4 में आदम और उसके परिवार का विवरण इच्छित किए हुए वास्तविक इतिहास के हर तरह के वर्णन का प्रगटीकरण का वृतान्त देता है। कुछ साहित्यिक शैलियों की प्रवृति अत्यधिक आलंकारिक और रूपकीय जैसे कविता और दृष्टान्तों की तरह हो जाती हैं। अन्यों की प्रवृति अत्यधिक स्पष्टतावादी है, जैसे ऐतिहासिक कथाएँ। उत्पत्ति का अधिकांश भाग अविवादास्पद रूप से ऐतिहासिक कथा है, जैसे उत्पत्ति 11-37 के अध्यायों में पाए जाने वाला कुलपतियों का आरम्भिक इतिहास, और उत्पत्ति 37-50 में पाए जाने वाला कुलपतियों जैसे यूसुफ का उत्तरकालीन इतिहास। और उत्पत्ति 2-4 का साहित्य इन अन्य संदर्भों के साथ बहुत ही घनिष्ठता के साथ मेल खाता है। सच्चाई तो यह है कि, उत्पत्ति 2 उसी साहित्यिक संकेतक के द्वारा परिचित कराई गई है जो इस पूरी पुस्तक के कई अन्य ऐतिहासिक वृतान्तों को परिचित कराता है। उत्पत्ति 2:4 में लिखे हुए मूसा के फार्मूलाबद्ध शब्दों को सुनिए:

आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृतान्त यह है जब वे उत्पन्न हुए (उत्पत्ति 2:4)।

यह वाक्यांश "वृतान्त यह है" – *इलाह टोलडोथ,* का इब्रानी भाषा से शाब्दिक भाषान्तरण "यह वह पीढ़ियाँ है," से हो सकता है। यही वाक्यांश उत्पत्ति की पूरी पुस्तक में मनुष्य की पीढ़ियों की सूचियों और वृतान्तों से परिचित कराती है। यह 5:1 में आदम, 6:9 में नूह, 11:10 में शेम, 11:27 में तेरह, 25:12 में इश्माएल, 25:19 में इसहाक, 36:1, 9 में एसाव और 37:2 में याकूब के वंशज को परिचित कराती है।

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति आदम के जीवन की जीवनी बारे में विवरण देती है। उदाहरण के लिए, हमें कहा गया है कि हव्वा गर्भवती हो गई, और हमें उनके तीन बच्चों के नाम: कैन, हाबिल और शेत को बताया गया है। हमें यह भी बताया गया है कि आदम कितने वर्षों तक जीवित रहा, यह कि जब वह 130 वर्षों का था तब शेत का जन्म हुआ, और जब उसकी मृत्यु हुई तो वह 930 वर्षों का हुआ। यह जीवनकाल आज के समय में रहने वाले मनुष्य से बहुत ज्यादा लम्बा है, परन्तु यह स्पष्टता के साथ ऐतिहासिक आंकड़ों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस तरह से, इन अध्यायों की साहित्यिक कथाओं की बनावट के प्रकाश में, पीढ़ियों का फार्मूला जो उन्हें और आदम के जीवन के विवरण को परिचित कराता है, हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि मूसा ने चाहा कि उत्पत्ति 2-4 को इतिहास के रूप में पढ़े जाएँ। दूसरे शब्दों में, उसने चाहा कि उसके पाठक यह विश्वास करें कि आदम और हव्वा वास्तविक, ऐतिहासिक लोग थे।

अब क्योंकि हमने उत्पत्ति में आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को देख लिया है, इसलिए आइए हम हमारे ध्यान को पुराने नियम की अन्य पुस्तकों की ओर केन्द्रित करें।

पुराना नियम

पुराने नियम में हव्वा का उल्लेख कहीं भी इस नाम से नहीं किया गया है। परन्तु आदम का उल्लेख दो बार किया गया है। और दोनों ही स्थानों में, उसे एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 1 इतिहास 1:1 में दी हुई वंशावली के आरम्भ में उस शेत के ऐतिहासिक पिता के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। यह वंशावली आदम के समय से लेकर, ईसा पूर्व छठी सदी के अन्त के निकट तक की बाबुल की बन्धुवाई में लौट कर आने वाले इस्राएल और यहूदा की पीढ़ियों का वर्णन देती है। बन्धुवाई से लौटे हुओं के लिए, एक सटीक, ऐतिहासिक वंशावली बहुत ही महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसने प्रतिज्ञात् भूमि पर उनकी मीरास पाने और उचित भूमिकाओं को स्थापित करने में सहायता प्रदान की। मिथक कथा के ऊपर आधारित एक वंशावली इस लक्ष्य को प्राप्ति नहीं कर सकती थी, और इसलिए, इतिहास की पुस्तक के लेखक के मूल पाठकों के लिए प्रेरणाप्रद नहीं हो सकती थी।

आदम का अन्य उल्लेख होशे की पुस्तक में होता है। यह वचन इस्राएल के ऐतिहासिक लोगों के पापों की तुलना आदम के पास के साथ करती है। होशे 5:7 को सुनिए:

परन्तु उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया है - उन्होंने वहाँ मुझ से विश्वासघात किया है (होशे 6:7)।

कुछ व्याख्याकार यह विश्वास करते हैं कि यह संदर्भ एक शहर के लिए किया गया है जिसे आदाम के नाम से जाना जाता है, जिसका उल्लेख यहोशू 3:16 में किया गया है। परन्तु इस शहर के पाप किए जाने के बारे में यहोशू में कोई भी संदर्भ नहीं मिलता है। इसलिए यह असंगत होगा कि यह होशे में इसके पर्याय के रूप में लिखा गया है – विशेषकर जब हमारे प्रथम पिता का पाप बहुत ही स्पष्ट रूप से जाना-पहचाना हो और जिसके मानव जाति के ऊपर भयानक दुष्परिणाम आए हो। हो सकता है कि अन्य लोग यह सुझाव दें कि आदम को इस कार्य की तुलना के लिए एक ऐतिहासिक व्यक्ति होने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु जैसा कि हम नए नियम में देखेंगे, आदम के साथ बाँधी गई वाचा केवल तब ही महत्वपूर्ण होती है यदि यह ऐतिहासिक हो।

अब क्योंकि हमने उत्पत्ति और बाकी के बचे हुए पुराने नियम में दी हुई आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को देख लिया है, इसलिए, आइए हम हमारे ध्यान को नए नियम की ओर केन्द्रित करें।

नया नियम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नया नियम आदम के बारे में कई बार बोलता है, और नए नियम के लेखक निरन्तर उसके इतिहास के साथ बहुत अधिक मात्रा में धर्मवैज्ञानिक महत्वपूर्णता को सम्बन्धित करते हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों 5:12-21 में, पौलुस दृढ़ता से कहता है कि आदम का पाप मनुष्य की मृत्यु का कारण है। इसके अतिरिक्त, उसने शिक्षा दी कि यीशु उस श्राप से जिसे हम आदम में दु:ख उठाते हैं, उसके विश्वासयोग्य लोगों को बचाता है। इसी जैसे कथनों को 1 कुरिन्थियों 15:22, 45 में भी देखा जा सकता है। इसलिए, यदि आदम एक ऐतिहासिक व्यक्ति न रहा होता, तो फिर यीशु किस बात से हमें बचाता है? यदि कोई ऐतिहासिक आदम परमेश्वर के विरूद्ध पाप किए जाने के कारण अस्तित्व में न होता, तब हमें क्रूस के ऊपर मरने के लिए एक ऐतिहासिक यीशु की भी आवश्यकता न होती।

पौलुस ने भी 1 तीमुथियुस 2:13, 14 में आदम की ऐतिहासिकता की पुष्टि की है, जहाँ उसने कहा कि आदम की रचना हव्वा से पहले हुई थी, और यह कि आदम से पहले हव्वा ने पाप किया था। इसी तरह से, यहूदा 14 भी आदम की पीढ़ियों को विश्वनीय मानता है जब वह हनोक को आदम से सातवीं पीढ़ी में हुआ मानता है। और सच्चाई तो यह है, कि पुराने या नये नियम में ऐसा एक भी स्थान नहीं मिलता है जो यह सुझाव देता हो कि आदम एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में वास्तविकता में *नहीं* था।

मैं सोचता हूँ कि आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता का इन्कार करने के बहुत अधिक निहितार्थ उन बातों के ऊपर पड़ेंगे जिनमें हम विश्वास करते हैं जिन्हें यीशु करने आया था। इसलिये, यदि आदम और हव्वा मात्र एक मिथक थे या एक गढ़ी हुई कहानी थे – आदम और हव्वा की कोई वास्तविक ऐतिहासिकता नहीं थी – तो यह परमेश्वर के लिए वास्तविक मूर्खता जान पड़ेगा कि वह एक मिथक के लिए आए और मरे जो कि वास्तव में कभी अस्तित्व में ही नहीं था, और मैं सोचता हूँ, और इसी कारण, हम यीशु मसीह की ऐतिहासिकता को भी मूल्यहीन ही समझेंगे, क्योंकि जब आप, उदाहरण के लिए, प्रेरित पौलुस को पढ़ते हैं, तो वह सदैव रूपकों का उपयोग करना पसन्द करता है कि सभी आदम में मर गए, परन्तु नया आदम, जो कि यीशु मसीह है, हमें जीवन देता है। इस कारण, यदि आदम वास्तव में कभी अस्तित्व में रहा ही नहीं, तो क्या मुझे नए आदम में भरोसा करना चाहिए?

- रेव्ह. यूवानी शिन्दो

अब हमने बाइबल आधारित वृतान्त को सारांशित करते हुए मनुष्य की सृष्टि और आदम और हव्वा की ऐतिहासिकता को मण्डन करते हुए देख लिया है, इसलिए, आइए हम हमारे ध्यान को मनुष्य की श्रेष्ठता के ऊपर केन्द्रित करें।

श्रेष्ठता

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, बाइबल स्पष्टता से शिक्षा देती है कि आदम और हव्वा को परमेश्वर द्वारा रचित पृथ्वी के सभी बाकी के प्राणियों में सबसे अधिक श्रेष्ठता के साथ रचा गया था। इस सच्चाई में कुछ संकेत हो सकते हैं कि उत्पत्ति 1:27 मनुष्य की सृष्टि को पशुओं की सृष्टि करते हुए एक अलग ही कार्य के रूप में, एक तरह से सृष्टि के चरमोत्कर्ष के रूप में, छठे दिन में होने के लिए सूचीबद्ध करती है। और सच्चाई तो यह है, कि यह केवल मनुष्य की सृष्टि के पश्चात् उत्पत्ति 1:31 में, कथा सृष्टि को साधारण रूप से "अच्छा" बुलाने की ओर से "बहुत अच्छा" बुलाने की ओर मुड़ती है। उत्पत्ति 2:7 में भी मनुष्य की श्रेष्ठता के संकेत मिल सकते हैं जहाँ पर आदम के लिए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उसमें जीवन परमेश्वर की ओर से डाले गए श्वास के कारण आया।

परन्तु सृष्टि के ऊपर आदम और हव्वा की श्रेष्ठता का स्पष्ट प्रमाण इस सच्चाई में मिलता है कि परमेश्वर ने उसे *अपने स्वरूप में* रचा और उसके अपने बदले में सृष्टि के ऊपर शासन करने के लिए नियुक्त कर दिया। आइए एक बार फिर से उत्पत्ति 1:27-28 को सुनें:

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दी, और उनसे कहा, "फूलो- फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-28)।

इसी तरह के विचार का उल्लेख उत्पत्ति 9:2 और भजन संहिता 8:6-8 जैसे स्थानों में व्यक्त किया गया है।

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना उसकी महिमा और गुणों को इस तरीके से प्रगट करने के लिए की जिसे अन्य प्राणी नहीं कर सकते थे। आगे आने वाले अध्याय में, हम परमेश्वर के स्वरूप की अवधारणा को विस्तार से देखेंगे। परन्तु अभी के लिए, इतना ही कहना चरितार्थ होगा कि परमेश्वर के स्वरूप में होने का अर्थ परमेश्वर की एक प्रतिमा के जैसा होना है। प्राचीन निकट पूर्व में, राजा अपने राज्य में चारों ओर अपनी प्रतिमाओं को अपने नागरिकों को राजा की परोपकारिता और महानता का स्मरण दिलाने के लिए खड़ा कर देते थे। ठीक इसी तरह से, मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप है। हमारा अस्तित्व में ही होना परमेश्वर की सामर्थ्य और महानता की ओर संकेत करता है। और क्योंकि पृथ्वी का और कोई भी प्राणी परमेश्वर का स्वरूप नहीं है, कोई भी अन्य प्राणी को इतना अधिक सम्मान नहीं मिलता है या किसी में भी इतनी अधिक गरिमा निहित नहीं है।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने हमारे प्रथम माता पिता को अन्य सभी सृजे हुए प्राणियों के ऊपर शासन करने के लिए नियुक्त किया जिसकी उसने रचना की थी। इस तरह से, मनुष्य, न केवल निहित रूप से श्रेष्ठ है; हमें साथ श्रेष्ठता की एक भूमिका भी दी गई है। यह *हमारा* कार्य है कि हम परमेश्वर के शासन के प्रबन्धन को इस पृथ्वी पर करें। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के प्रशासन का अधिकार का प्रतिनिधित्व *हमें* दे दिया है, और किसी पशु को नहीं दिया है। और हम इस विचार की पुष्टि के लिए उत्पत्ति 2:20 में देखते हैं, जहाँ पर आदम अपने अधिकार का उपयोग पशुओं का नामकरण करने के द्वारा करता है, और जहाँ पर कोई भी पशु ऐसा नहीं मिलता जो उसके लिए निर्धारित किए हुए कार्य को करने के लिए उसकी सहायता कर सके।

बाद में, पवित्रशास्त्र मनुष्य की श्रेष्ठता की पुष्टि वर्तमान में उसे लगभग स्वर्गदूतों के स्तर पर रखते हुए, और भविष्य में स्वर्गदूतों से भी ऊपर रखते हुए करता है। जैसा कि हम भजन संहिता 8:5 में पढ़ते हैं कि:

क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है (भजन संहिता 8:5)।

भजन संहिता 8 के बारे में एक सबसे उत्तम बात यह है कि यह उत्पत्ति 1:26-28 में घटित हुई घटना की एक गूंज है। दूसरी तरफ, बाइबल में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमें यह बताती हैं कि परमेश्वर कितना महान् है, यह ब्रह्माण्ड कितना विशाल है, और यहाँ तक कि ऐसे वचन हैं जो हमें यह बताते हैं, कि ब्रह्माण्ड बहुत बड़ा है; ब्रह्माण्ड की तुलना में आप एक बहुत ही छोटी वस्तु हैं। परन्तु दोनों अर्थात् उत्पत्ति 1:26 और 28, भजन संहिता 8, हमें परमेश्वर के इस संसार में उस की ओर से दिए हुए विशेष स्थान की महत्वपूर्णता के बारे में बताते हैं, ठीक है, वास्तव में परमेश्वर के ब्रह्माण्ड में, हम ऐसे हैं जो उसके स्वरूप में रचे गए हैं। अब, "उसके स्वरूप में रचे" गए हैं, की भाषा विशेष रूप से भजन संहिता 8 में नहीं मिलती है, परन्तु यहाँ पर "स्वर्गदूत से थोड़ा ही कम बनाया" और साथ ही "प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है," की भाषा मिलती है, और तब निश्चित ही मनुष्य को सृष्टि के ऊपर शासन करने की– सृष्टि के ऊपर अच्छे भण्डारी के रूप में शासन करने की भाषा की पुनरावृत्ति हुई है – यह वही बात है जिसकी पुनरावृति भजन संहिता 8 में हुई है। इस तरह से, भजन संहिता 8 हमें यह देखने में सहायता करता है, या हमें यह स्मरण दिलाता है, जब परमेश्वर ने हमें सृजा, तो उसने हमें बहुत ही अधिक विशेषता और उद्देश्य के साथ रचा था।

- विन्सेन्ट बॉकोट, पी.एच.डी.

दुर्भाग्य से, आज के समय में बहुत से लोग मनुष्य और पशुओं के मध्य की भिन्नता को नष्ट करने के प्रयास में लगे हुए हैं। उदाहरण के लिए, बहुत से विश्वास करते हैं कि मनुष्य प्रजाति विकास की एक दुर्घटना है। उनके लिए,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मनुष्य और पशुओं में भिन्नता प्राथमिक रूप से ऐतिहासिक है, जिसे डी एन ए के कुछ टुकड़ों में वर्णित किया गया है। और जबकि इस विचारधारा को अभी भी मान्यता मिलती हो कि मनुष्य पशुओं से मानसिक रूप में श्रेष्ठ है, तौभी यह उस मौलिक गरिमा को अस्वीकार कर देती है जो हमारे पास परमेश्वर के स्वरूप में है, और सृष्टि के सही अधिकारी होने के हमारे अधिकार को मूल्यहीन समझती है।

इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादियों ने इन दावों के प्रति विभिन्न तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त की है। मंच के इस ओर, हम में से कुछ ऐसा विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने इस संसार की रचना छ: सौर दिनों में की। और बहुत से यह विश्वास करते हैं कि आदम और हव्वा की रचना कम से कम छ: हज़ार वर्षों पहले हुई थी। मंच के दूसरी ओर, हम में से कुछ ऐसा विश्वास करते हैं कि सृष्टि की रचना इससे अधिक समय में हुई, और यह कि आदम और हव्वा कई हज़ारों लाखों वर्षों पहले रचे गए थे। परन्तु भले ही हम इनमें से कोई भी विचारधारा को क्यों न लें, हम सभी को इस बात पर सहमत होना होगा कि मनुष्य की रचना दोनों अर्थात् उसकी गरिमा और अधिकार में बाकी की सृष्टि से श्रेष्ठ हुई थी।

अभी तक, हमने हमारे पहले माता पिता की सृष्टि के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए यह अध्ययन किया कि आरम्भ में मनुष्य कैसा दिखाई देता था। अब आइए हम हमारे ध्यान को हमारे प्राणों की बनावट की ओर केन्द्रित करे।

बनावट

जब हम हमारी "बनावट" की बात करते हैं, तो हमारे ध्यान में वे विभिन्न भाग होते हैं जो एक व्यक्ति का निर्माण करते हैं। पवित्रशास्त्र एक विस्तृत विविधता वाली भाषा का उपयोग हमारे संघटक भागों के विवरण के लिए उपयोग करता है। यह हमारे शरीरों, मांस, दिल, दिमाग, आत्माओं, प्राणों, और कई अन्य चीजों के बारे में बात करता है। परन्तु अभी तक की सदियों में, धर्मशास्त्री सामान्यतया इस बात पर सहमत हुए हैं कि यह सभी भाग दो शब्दों के संदर्भ में सारांशित हो सकते हैं: भौतिक भाग, जिसे अकसर हमारा "शरीर" कह कर पुकारा जाता है, और अभौतिक भाग, जिसे विशेषकर हमारा "प्राण" या "आत्मा" कह कर पुकारा जाता है।

अधिकांश इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी धर्मशास्त्री इस बात पर सहमत हैं कि मनुष्य भौतिक शरीर और अभौतिक प्राण से मिल कर बना है, और यह कि ये भाग एक ही व्यक्ति में एकीकृत हैं। परन्तु इन बातों के ऊपर पवित्रशास्त्र की शिक्षा इनका विवरण करने वाले शब्दावली की भिन्नताओं के कारण जटिल है, विशेषकर जब बात हमारे अभौतिक प्राण की आती है। परन्तु फिर भी, जब बाइबल हमारे मानवीय स्वभाव को भौतिक और अभौतिक शब्दों में सारांशित करती है, तब यह हमारे भौतिक भाग के लिए एक ही शब्दावली को और अभौतिक भाग के लिए अन्य शब्दावली का निरन्तर प्रयोग करती है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 7:1 में, पौलुस लिखता है कि:

> **हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें (2 कुरिन्थियों 7:1)।**

इस वचन में, पौलुस संकेत देता है कि हमारे मानवीय स्वभाव को हम शब्दों के संदर्भ में दो भागों में सारांशित कर सकते हैं: भौतिक शरीर और अभौतिक आत्मा। और हम इसी तरह की शब्दावली को पूरे पवित्रशास्त्र में पाते हैं जिसमें: रोमियों 8:10; 1 कुरिन्थियों 7:34; कुलुस्सियों 2:5; याकूब 2:26; और 1 पतरस 4:6 सम्मलित है।

> **बाइबल यह शिक्षा देती है कि मनुष्य दोनों अर्थात् भौतिक भाग जिसे शरीर और एक अभौतिक भाग जो प्राण, आत्मा, हृदय, और इससे सम्बन्धित विविध शब्दावलियों, के संयोजन से मिल कर बना हुआ है। और मानवीय स्वभाव के यह दोनों ही भाग आवश्यक हैं और सृष्टि के हमारे आरम्भिक स्वभाव में इसके भाग रहे होंगे, और आख़िर में पुनरूत्थान में हमारे स्वभाव के भाग रहेंगे, इसलिए हम आख़िर में केवल एक प्राण या केवल एक आत्मा में परिवर्तित नहीं होंगे। आख़िर में शरीर जी उठेगा। इस कारण, ये दोनों अर्थात् मानवीय स्वभाव के ये दोनों भाग वर्तमान और भविष्य में महत्वपूर्ण हैं।**

- डॉ. जॉन हाम्मेट

इस समझ के साथ, मानवीय बनावट के ऊपर हमारे विचार विमर्श को हम दो भागों में विभाजित करेंगे। प्रथम, हम यह देखेंगे, कि प्रत्येक मनुष्य के पास एक भौतिक शरीर है। और दूसरा, हम इस सच्चाई को सम्बोधित करेंगे कि हमारे पास एक अभौतिक प्राण भी है। आइए सर्वप्रथम हम हमारे भौतिक शरीर की ओर मुडें।

भौतिक शरीर

हमारे मानवीय स्वभाव के भौतिक और अभौतिक पहलूओं को संदर्भित करने के लिए पवित्रशास्त्र कई भिन्न शब्दावलियों का उपयोग करता है। बहुधा, यह शब्द शरीर का उपयोग यह कहने के लिए करता है कि मनुष्य की रचना वास्तविक, भौतिक पदार्थ से हुई है।

मत्ती 10:28 में जैसा कि यीशु ने हमारे मानवीय स्वभाव के बारे में कहा था कि:

> **जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते हैं, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है (मत्ती 10:28)।**

इस वचन में, यीशु ने शरीर शब्द का उपयोग हमारे प्राण, या अभौतिक गुणों से हमारे भौतिक गुणों की भिन्नता को उदधृत करने के लिए किया है।

बाइबल "शरीर" शब्द का उपयोग करने के साथ ही हमारे भौतिक गुणों को बताने के अन्य शब्दों को भी उपयोग भी करती है जैसे कुलुस्सियों 1:24 में "देह," 1 कुरिन्थियों 15:50 और इब्रानियों 2:14 में "मांस और लहू," और उत्पत्ति 2:23 में "मांस और हड्डी" जैसे संदर्भ। और व्यवस्था विवरण 6:5 और मरकुस 12:30 में हमारी भौतिक क्षमताओं के लिए शब्द "शक्ति" का उपयोग किया गया है।

स्पष्ट है, कि शरीर कई भिन्न भागों से मिल कर बना है। कई बार, शरीर के कई भागों अर्थात् अंगों को एक साथ जोड़ते हुए सामूहिक रूप से शरीर कह कर उदधृत किया जाता है, जैसा कि रोमियों 7:23 में शब्द "अंग" आया है। परन्तु बाइबल इन भागों या अंगों को उनके अपने स्वरूप में भी पहचान करती है, जैसे हाथ, बाँहें, पैर, आँखें, और ऐसे ही अन्य भागों को। परन्तु जबकि हम शरीर के प्रत्येक भाग की एक बहुत ही लम्बी सूची को निर्मित कर सकते हैं जैसा कि पवित्रशास्त्र उल्लेख करता है, इससे हमारे उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होगी। पवित्रशात्र के नेतृत्व का अनुसरण करते हुए, धर्मशास्त्री इन अंगों की केवल इतनी ही समझ से सन्तुष्ट हैं कि यह विस्तृत रूप से आपस में सम्बन्धित हैं जिसे हम हमारे भौतिक शरीर के रूप में पहचानते हैं।

अब, यह जानना महत्वपूर्ण है कि हमारे भौतिक शरीर केवल अस्थाई नहीं है; वे हमारे अस्तित्व के पहलूओं के लिए आवश्यक, और हमारे मानवीय स्वभाव के महत्वपूर्ण अंग हैं। हमारा शरीर तब आरम्भ होता है जब हम गर्भ में आते हैं, और वह हमारे पूरे पार्थिव जीवन के अन्त तक हमारे साथ रहता है। और यद्यपि हमारे भौतिक शरीर मृत्यु के समय हमारे अभौतिक प्राणों से अलग हो जाते हैं, तौभी वे निरन्तर हमारे ही भाग रहते हैं। यही वह कारण है कि पवित्रशास्त्र अक्सर मरे हुओं के लिए कहता है कि वे अपनी क्रबों में पड़े हुए हैं, और उन मृतक देहों की पहचान उन्हीं लोगों से करता है जैसे कि वे अपने जीवनकाल में थे। हम इसे 2 इतिहास 24:15, 16 में यहोयादा के संदर्भ में देखते हैं, जिस के लिए कहा गया है कि वह दाऊद के शहर में राजाओं के साथ गाड़ा गया था। और प्रेरितों का काम 13:36 में, पतरस ने दाऊद के विषय में कहा है कि वह अपने पूर्वजों के साथ गाड़ा गया था। यीशु का मित्र लाजर के लिए भी कहा गया है कि उसे यूहन्ना 11:17 में उसकी व्यक्तिगत् कब्र में गाड़ा गया था। और स्वयं यीशु के लिए प्रेरितों के काम 13:29, 30 में कहा गया कि वह अपने पुनरूत्थान से पहले कब्र में गाड़ा गया था।

इसके अतिरिक्त, युग के अन्त में सामान्य पुनरूत्थान के समय, प्रत्येक व्यक्ति की देह जो मर गया है, वह परमेश्वर के न्याय का सामना करने के लिए जी उठेंगी। उस समय, हमारे प्राण और हमारे शरीर फिर से एक हो जाएंगे, और वे फिर कभी एक दूसरे से अलग नहीं होंगे। छुटकारा पाए हुए नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में नए जीवन के

भागी होने के लिए जी उठेंगे। परन्तु दुष्ट दण्ड और उनके शरीर शाश्वतकाल के लिए पीड़ा भोगने के लिए जी उठेंगी। यूहन्ना 5:28-39 में यीशु के दिए हुए शब्दों को सुनिए:

क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका [मनुष्य के पुत्र] शब्द सुनकर निकल आएँगे - जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्हों ने बुराई की है वे दण्ड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-39)।

भौतिक शरीर के ऊपर हमारी इस समझ के साथ,आइए हम हमारी बनावट के दूसरे पहलू: हमारे अभौतिक प्राण को सम्बोधित करें।

अभौतिक आत्मा

जैसा शरीर के साथ था, पवित्रशास्त्र हमारे मानवीय स्वभाव के अभौतिक पहलू के लिए कई तरह के शब्दों का उपयोग करता है। सामान्य शब्दों में से एक "प्राण" है, जो अक्सर इब्रानी भाषा के शब्द *नेफेश* या यूनानी भाषा के शब्द *सूके* का अनुवाद करता है। ये शब्द सामान्य रूप से मानवीय स्वभाव के अभौतिक स्वभाव की सम्पूर्णता का उल्लेख करते हैं, परन्तु ये कई बार एक सम्पूर्ण प्राणी की ओर संकेत करते हैं, जिसमें भौतिक शरीर भी सम्मिलित है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 2:7 हमें बताता है कि जब परमेश्वर ने आदम में जीवन के श्वास को फूँका, तब आदम एक "जीवित प्राणी" या *नेफेश* बन गया। इस उदाहरण में, इसका अर्थ है कि वह एक जीवित, श्वास लेने वाला प्राणी बन गया। और यूहन्ना 15:13 में, यीशु ने शब्द *सूके* का संकेत हमारी जीवित देह के लिए किया है जब उसने यह वर्णित किया कि सबसे बड़ा प्रेम यह है कि हम हमारे जीवन – *सूके*– को अपने मित्रों के लिए न्योछावर कर दें।

हमारे भौतिक भाग के लिए सामान्य शब्दों में सबसे सामान्य शब्द "आत्मा" है जो विशेषकर इब्रानी भाषा के शब्द *रूआख़* या यूनानी भाषा के शब्द *न्यूमा* का भाषान्तरण है। दोनों शब्द अक्सर मानवीय स्वभाव के सम्पूर्ण अभौतिक पहलू की ओर संकेत देते हैं, और इस अर्थ में, वे अपेक्षाकृत प्राण से सम्बन्धित शब्दों के साथ पर्यायवाची हैं। परन्तु फिर भी, "आत्मा" को अन्य विविध बातों के लिए भी उपयोग किया जा सकता है, जैसे "श्वास," "हवा" या यहाँ एक व्यवहार या आचरण, जैसा कि 2 तीमुथियुस 1:7 में भय का आत्मा वाक्यांश पाया जाता है।

इन शब्दों के अलावा, पवित्रशास्त्र में हमारे अभौतिक प्राणी के विभिन्न पहलूओं के लिए कई और भी शब्द हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि रोमियों 7:23 में पाया जाता है, "बुद्धि" जो सामान्य रूप से हमारे नैतिक, बौद्धिक और तार्किक विचार की पहचान है। और जैसा कि 1 शमूएल 16:7 और 2 तीमुथियुस 2:22 में पाया जाने वाले "मन" की पहचान कई बात हमारे आन्तरिक जीवन, या हमारे विचारों, इच्छा, अहसासों और भावनाओं के अभौतिक स्रोत से होती है। यहाँ तक कि इब्रानी शब्द *मीह* को सामान्य तौर पर भजन संहिता 40:8 जैसे स्थानों में आँत, गर्भ या अन्त:करण के रूप में भाषान्तरित किया जाता है।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है, बाइबल में हमारे अभौतिक प्राणी के विभिन्न भागों या अंगों के लिए कई और भी बहुत से शब्द हैं, जिसमें विवेक, इच्छा, कारण, विचार, बुद्धि और भावनाओं की बड़ी मात्रा सम्मिलित है। सामान्य रूप से, जैसा कि हमारे शरीरों के साथ है, धर्मशास्त्रियों ने समझ लिया है कि ये सभी अंग उस विस्तृत रूप से सम्बन्धित हैं जिसे हम हमारे अभौतिक शरीर के रूप में पहचानते हैं।

हमारे पास बाइबल में विवरण मिलते हैं कि कैसे मनुष्य का वर्णन प्राण और बुद्धि और मन और आत्मा के साथ बने हुए रूप में किया गया है, और इनमें से कई शब्द पर्यायवाची हैं, और कई अतिव्यापी उपयोग होते हैं, परन्तु उनके सबके भिन्न भिन्न कार्य हैं। इस तरह से, मन आत्मिक केन्द्र या व्यक्ति के केन्द्र का एक रूपक है। बुद्धि मन का भाग हो सकती है, और मन का ही भाग रहेगी, भावनाएँ मन के भीतर हैं। इस तरह से मन सोचता है, मन चुनाव करता है, मन विश्वास करता है, मन अहसास करता है। आत्मा और प्राण भी एक तरह अतिव्यापी रूप में उपयोग होते हैं। इस तरह से, मन आत्मा का केन्द्र और प्राण के केन्द्र

की तरह होगा, परन्तु आत्मा और प्राण के मध्य में किसी तरह का कोई अन्तर- परिवर्तन नहीं है। यह दोनों एक जैसे ही हैं। इससे मैं यह कह सकता है कि, "आत्मा" मनुष्य के अभौतिक भाग के लिए उपयोग होता है; और तब स्वर्गदूत आत्माएँ हैं, परमेश्वर एक आत्मा है। इस तरह से, यह एक अ-भौतिक तत्व हैं। "प्राण" का संकेत पूर्ण व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसमें आत्मा और शरीर सम्मिलित है। और इस कारण, जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो उसे एक प्राण कह कर पुकारा जा सकता है, परन्तु उन्हें अक्सर मृत्यु उपरान्त एक आत्मा कह कर नहीं पुकारा जाता है। इस तरह से यह एक अतिव्यापी उपयोग है। मुझे नहीं लगता कि यह ऐसा संकेत दे रहा है कि आत्मा एक भाग है और प्राण एक अन्य भाग है। यह एक ही गहन आत्मिक वास्तविकता के बारे में बोलने के विभिन्न तरीके हैं जो कि एक मनुष्य होता है, और बात यह है कि यह हमारे शरीर के बहुत अधिक है, और यहाँ पर जटिलता है यद्यपि यह एक आत्मिक, अदृश्य, अ-भौतिक जैसी बात है। इस तरह से, यह थोड़ा सा पेचीदा है।

- डॉ. जॉन मेक्क्लिली

अभौतिक प्राण के ऊपर हमारे इस मूल परिचय को अपने ध्यान में रखते हुए, इससे सम्बन्धित तीन विचार हैं: हमारे प्राणों का उदगम, हमारे प्राणों का अमरत्व, और "त्रि-भागी" के नाम हमारी अभौतिक बनावट के ऊपर एक वैकल्पिक दृष्टिकोण, के ऊपर निकटता से ध्यान दिया जाना चाहिए। आइए हम प्राण के उदगम के साथ आरम्भ करें।

उदगम

मनुष्य के प्राण की उत्पत्ति से सम्बन्धित कई दृष्टिकोण पाए जाते हैं। कुछ धर्मशास्त्री जिन्हें – "सृष्टिवादी" कहा जाता है, विश्वास करते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति में उसके गर्भ में आने के समय उसके प्राण की रचना करता है। यह दृष्टिकोण अपने समर्थन को जकर्याह 12:1 जैसे स्थानों से पाता है, जहाँ पर लिखा है कि परमेश्वर मनुष्य के भीतर उसकी आत्मा की रचना करता है। सृष्टिवादी यशायाह 42:5 और इब्रानियों 12:9 जैसे स्थानों को भी उदधृत करते हैं जो यह संकेत देते हैं कि परमेश्वर हमारे प्राणों का रचनेहारा है।

अन्य धर्मशास्त्री, जिन्हें "जीवानुवंशिकतावादी" कह कर कह कर पुकारा जाता है, यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य अपने प्राणों को सीधे ही अपने माता पिता से पाते हैं। इस दृष्टिकोण में, हमारे माता पिता हमारे प्राणों को ठीक उसी तरह से देते हैं जिस तरह से उनके शरीर हमारे शरीरों को देते हैं। जीवानुवंशिकतावादी अक्सर इस बात की व्याख्या करते हैं कि क्यों लोग पापपूर्ण प्राणों के साथ जन्म लेते हैं, कयोंकि इसकी व्याख्या करना कठिन कार्य है कि क्यों परमेश्वर ने एक ऐसे प्राण की रचना करता है जो पहले से ही पापपूर्ण है। जीवानुवंशिकतावादी रोमियों 5:12 जैसे संदर्भों के ऊपर निर्भर होते हैं जिसमें यह समाविष्ट है कि हमने हमारे पाप को आदम से सामान्य या प्राकृतिक पीढ़ियों के माध्यम से प्राप्त किया है, और इब्रानियों 7:9, 10 जो यह शिक्षा देता है कि लेवी का बीज उसके पूर्वज अब्राहम की देह में उपस्थित था।

हम निश्चित हैं कि हमारे प्राण परमेश्वर की ओर से हैं। परन्तु यह कैसे होता है, यह ठीक से स्पष्ट नहीं है। इसलिए इन अध्यायों में, हम तर्क के लिए किसी भी पक्ष की ओर दृढ़ता से खड़े नहीं होंगे।

बहुत से लोग यह अपेक्षा करते है कि बाइबल हमें हमारे प्राण के उदगम और यह कैसे आया और यह कैसे रचा गया के बारे में बताए। बाइबल इन प्रश्न को स्पष्ट नहीं करती है, परन्तु यह हमें यह बताती है कि मनुष्य केवल एक भौतिक शरीर ही नहीं है; अपति उसके पास एक अभौतिक भाग भी है। मनुष्य के पास एक शरीर, एक आत्मा और एक प्राण है। बाइबल कहती है कि जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, उसने उसमें फूँका और वह एक जीवित आत्मा बन गया। यह आत्मिक भाग है। बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि वह कैसे आया, परन्तु यह कि वह उपस्थित है, और यह कि हमें इसकी देखभाल करनी है। मनुष्य का यह भाग रोटी या सामान्य भौतिक वस्तुओं से सन्तुष्ट नहीं होता है। अगस्तीन ने वर्णित किया है: कि हमारे जीवन के दोनों अर्थात् भौतिक और आत्मिक जीवनों में पूर्णता को भरने के लिए यीशु को आने की आवश्यकता है।

- डॉ. राएड कोसिस, अनुवादित

हमारे अभौतिक प्राण के उदगम के बारे में बोल लेने के पश्चात्, आइए संक्षेप में हम इसके अमरत्व को सम्बोधित करें।

अमरत्व

बाइबल शिक्षा देती है कि हमारे प्राण हमारे शरीरों के मरने के पश्चात् निरन्तर अस्तित्व में रहते हैं। जबकि हमारे शरीर उनकी क़बों में रहते हैं, दुष्ट के प्राण अस्थाई रूप से नरक के दण्ड को भोगते हैं, और विश्वासी अस्थाई आशीष का स्वर्ग में आनन्द पाते हैं। यह तब घटित होता है जिसे धर्मवैज्ञानिक "मध्यवर्ती अवस्था," या इस पृथ्वी पर हमारे अब के जीवन और मसीह के आगमन के समय के पुनरूत्थान के मध्य का समय कह कर पुकारा जाता है। जैसा कि पौलुस 2 कुरिन्थियों 5:8 में कहता है:

इसलिए...देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं (2 कुरिन्थियों 5:8)।

पौलुस इंगित करता है कि हमारे मानवीय स्वभाव का अभौतिक पहलू मृत्य पश्चात जीवित रह जाता है। और यदि हम विश्वासी हैं, तो हमारे प्राण प्रभु के साथ चले जाते हैं। पवित्रशास्त्र कुछ इसी तरह से लूका 23:43; प्रेरितों के काम 7:59; फिलिप्पियों 1:23, 24; और प्रकाशितवाक्य 6:9 में भी बोलता है।

कुछ इसी तरह का सत्य अविश्वासी प्राणों के साथ भी है। स्वर्ग में प्रभु की उपस्थिति का आनन्द लेने की अपेक्षा, वे नरक में दु:ख उठाते हैं। जैसा कि लूका 12:4-5 में यीशु ने शिक्षा दी है:

जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते उनसे मत डरो... मैं तुम्हें चिताता हूँ कि तुम्हें किससे डरना चाहिए, घात करते के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो : हाँ, मैं तुम से कहता हूँ उसी से डरो (लूका 12:4-5)।

यद्यपि नरक एक मृत्यु का स्थान है, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र में मृत्यु अस्तित्व के रूकने का विषय नहीं है। इसकी अपेक्षा, यह परमेश्वर के न्याय के अधीन आ जाने का विषय है। इस कारण दण्ड और आशीष के दृष्टिकोण से, नरक में प्राण मर चुका है। परन्तु अस्तित्व के दृष्टिकोण से, ये प्राण सदैव के लिए बने रहेंगे।

अस्थाई दण्ड और आशीष की मध्यवर्ती अवस्था के पश्चात्, हमारे प्राण हमारे शरीरों के साथ सामान्य पुनरूत्थान में एक हो जाएँगे। उस समय, हम हमारे अन्तिम, स्थाई गंतव्य की ओर जाँएगे। दुष्ट नरक में शारीरिक और आत्मिक रूप से दु:ख उठाएँगे। परन्तु विश्वासी होने के नाते, जब हमारे पुनरूत्थित शरीर हमारे अभौतिक प्राणों के साथ एक होंगे, तो हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर सदैव के लिए मसीह के साथ आत्मिक और शारीरिक रूप से वास करेंगे।

अब क्योंकि हमने उदगम और अमरत्व के संदर्भ में मनुष्य के अभौतिक प्राण के ऊपर ध्यान कर लिया है, हमे त्रि-भागी के धर्मसिद्धान्त का उल्लेख करना चाहिए।

त्रि-भागी

विश्वासी होने के नाते, हम जानते हैं कि मनुष्य मात्र *भौतिक* जीव नहीं है। कुल मिलाकर, पवित्रशास्त्र एक बड़ी मात्रा में कई तरीके से हमारे अभौतिक प्राणों के बारे में बात करता है। इवैन्जेलिकल विचारधारा वाले धर्मशास्त्रियों और विद्वानों में सबसे सामान्य दृष्टिकोण वही है जिसके बारे में हमने पहले ही वर्णन कर दिया है, जिसे "द्वि-भागी" या द्वि-खण्डी दृष्टिकोण के नाम से जाना जाता है। यह ऐसा धर्मसिद्धान्त है जो यह कहता है कि मनुष्य मौलिक रूप में *दो* भागों शरीर और प्राण के संयोजन से निर्मित हुआ है।

परन्तु फिर भी, सभी इवैन्जेलिकल धर्मशास्त्री यह विश्वास नहीं करते हैं कि हमारी बनावट एक भौतिक शरीर और एक अभौतिक प्राण के शब्दों में वर्णित उत्तम रीति से वर्णित की गई है। इसकी अपेक्षा, कुछ धर्मशास्त्री दृढ़ता से "त्रि-भागी" या त्रि-खण्डी होने के धर्मसिद्धान्त के दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं। यह दृष्टिकोण कहता है कि मनुष्य तीन भागों : शरीर, प्राण और आत्मा के संयोजन से मिलकर बना है। त्रि-भागी मूल रूप से थोड़े से वचन पर आधारित है जो मनुष्य के प्राण और आत्मा में भिन्नता को दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 4:12 कहता है:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है (इब्रानियों 4:12)।

त्रि-भागीवादी विद्वान यह तर्क देते हैं कि यह वचन मनुष्य के अभौतिक भाग के आत्मा और प्राण में भिन्नता को प्रस्तुत करता है। इसी तरह के तर्क 1 कुरिन्थियों 15:44 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 से किए जाते हैं।

इस तरह के वचनों पर आधारित हो, त्रि-भागीवादी विद्वान यह तर्क देते हैं कि आत्मा और प्राण एक नहीं है। हमारे प्राण विशेषकर हमारे निम्न अभौतिक कार्यों से सम्बन्धित हैं, जैसे कि वे जो हमारे शरीर को सजीव करते, और हम में इच्छाएँ और भूख को उत्पन्न करते हैं। इसके विपरीत, हमारी आत्मा हमारे उच्च अभौतिक कार्यों से सम्बन्धित है, जिसमें वे सम्मिलित हैं जो हमें परमेश्वर के साथ सम्पर्क में लाते हैं।

परन्तु चाहे हम द्वि-भागी या त्रि-भागी में विश्वास करें, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि बहुत से इवैन्जेलिकल भले विवेक के साथ पहली वाली विचारधारा को थामे रहते हैं। और हमें यह जोर देना चाहिए कि दोनों ही अर्थात् द्वि-भागी और त्रि-भागी विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि मनुष्य आंशिक रूप से भौतिक और आंशिक रूप से अभौतिक है।

मनुष्य के बारे में द्वि-खण्डी और त्रि-खण्डी दृष्टिकोणों के ऊपर एक लम्बे समय से विचार विमर्श किया जाता रहा है, और दोनों के पास कुछ सीमा तक व्याख्यात्मक अधिकार हैं...इसलिए हम इसके ऊपर बहस नहीं करेंगे, और विशेष रूप से किसी एक को शास्त्र-सम्मत और अन्य को शास्त्र-विरूद्ध के रूप में थामे रखना एक योग्य प्रश्न भी नहीं है।

- डॉ. रमेश रिचर्ड

हमारे प्राणों की बनावट हमें बताती है कि दोनों अर्थात् हमारे शरीर और हमारे प्राण महत्वपूर्ण हैं। कई बार हम आत्मिकता के ऊपर इतना ज्यादा ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं कि हम हमारी भौतिक आवश्यकताओं, या हमारे चारों और रहने वालों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल हो जाते हैं। या अधिकांश, हम इस पृथ्वी पर अपने भौतिक जीवन की महत्वपूर्णता के ऊपर इतना अधिक जोर देते हैं कि हम हमारे आत्मिक विकास के ऊपर उचित ध्यान देने में असफल हो जाते हैं। परन्तु शरीर-प्राण की हमारी बनावट हमें इन दोनों की महत्वपूर्णता की पहचान करने – और इसके परस्पर सम्बन्धित होने - के लिए उत्साहित करती है। यदि हम वास्तव में आत्मिक रूप से गंभीर हैं, तो हम भौतिक संसार में हमारे शरीरों के साथ परमेश्वर का सम्मान करेंगे, और हम अन्य की भौतिक आवश्यकताओं की चिन्ता करेंगे। और यदि हम वास्तव में हमारे शरीरों से परमेश्वर की महिमा और उसके कार्यों को करने की लालसा करने की खोज करते हैं, तो यह हमारे मनों और प्राणों में आत्मिक विकास को उत्पन्न करेगा।

आरम्भ में मनुष्य कैसा था के ऊपर अभी तक इस अध्याय में, हमने मनुष्य की सृष्टि और हमारे प्राणों की बनावट को देखा। आइए अब हम हमारे अन्तिम तीसरे मुख्य विषय: परमेश्वर के साथ मनुष्य की पहली वाचा के सम्बन्ध की ओर मुड़ें

वाचा

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सृजा, तो उसने उन्हें पृथ्वी पर यों ही स्वतंत्र नहीं छोड़ दिया और चाहा कि वह जंगलियों की तरह जीवन यापन करें। उसने उन्हें एक उद्देश्य के साथ रचा: जो उसके पार्थिव राज्य का निर्माण करना था। उसने उसे ऐसी क्षमताओं और ऐसी सहायता के साथ सृजा जो कि इस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक थी। उसने उन्हें निष्ठावान् बने रहने और मेहनत के साथ कार्य करने के लिए नियमों को निर्धारित किया। उसने उन्हें उन आशीषों के बारे में समझा दिया जिसे वे तब प्राप्त करेंगे जब वे उसकी आज्ञा का पालन करने हैं और उन दण्डों को जिन्हें वह तब पाएँगे जब वे उन्हें पालन नहीं करते हैं। धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में, हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं और मनुष्य के मध्य में एक वाचा को स्थापित किया।

पुराने और नए नियम के पूरे इतिहास में, परमेश्वर ने उसके लोगों के साथ एक औपरचारिक सम्बन्ध में प्रवेश किया। इस औपचारिक सम्बन्धों की शर्तें लिख दी गई थी जिसे पवित्रशास्त्र "वाचा" कह कर पुकारता है जो

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कि इब्रानी शब्द *बिरीथ* और यूनानी शब्द *डियाथिके* का भाषान्तरण है। ये वाचाई सम्बन्ध प्राचीन अंतरराष्ट्रीय वाचाओं के साथ मेल खाते थे, विशेषकर उन सन्धियों के साथ जो बड़े "सम्राटों" या अधिपतियों और ऐसे अधीनस्थ राज्य जो उनके अधीन थे के मध्य में होती थी।

इन प्राचीन सन्धियों के तीन गुण थे: अपने अधीनस्थ के प्रति अधिपति की परोपकारिता, अधिपति की ओर से अपने अधीनस्थ राजा से निष्ठा की शर्तें, और अधीनस्थ राजा की निष्ठा या निष्ठाहीनता से निकलने वाले परिणाम। और ये सन्धियाँ या वाचाएँ अभी तक की पीढ़ियों में निरन्तर चलते आए हैं, परिणामस्वरूप अधीनस्थ राजा के उत्तराधिकारी अपने अधिपति के उत्तराधिकारियों की निरन्तर सेवा करते रहें। बहुत कुछ इसी तरह से, परमेश्वर की वाचा उसकी परोपकारिता को उसके लोगों के लिए, निष्ठा की ऐसी शर्तें जिसे उन्हें पूरी करना है, और उन शर्तों के प्रति निष्ठा और निष्ठाहीनता से निकलने वाले परिणामों का उल्लेख करती है।

अब, उत्पत्ति 1-3 में दिए हुए मनुष्य की सृष्टि के वृतान्त में, इब्रानी भाषा शब्द *बिरीथ* का उपयोग नहीं करती है। और सेप्तुआजिन्त अर्थात् सप्तति अनुवाद, पुराने नियम का आरम्भिक यूनानी भाषान्तरण, भी वहाँ पर *डियाथिके* शब्द का भाषान्तरण नहीं करती है। जिसके परिणामस्वरूप, कुछ धर्मशास्त्री परमेश्वर और आदम के मध्य के सम्बन्ध का इन्कार कर देते हैं जिसे उचित रूप से एक वाचा कह कर पुकारा जा सकता है। परन्तु फिर भी, पवित्रशास्त्र बड़ी दृढ़ता से सुझाव देता है कि परमेश्वर ने आदम के साथ और बाकी के मनुष्य के साथ आदम के माध्यम से एक वाचा को बाँधा।

एक बात जो यह है, कि आदम के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध में सभी सामान्य वाचा के तत्व पाए जाते हैं। परमेश्वर स्पष्ट रूप से आदम के ऊपर संप्रभु, सर्वोच्च राजा था। और, जैसा कि हमने उत्पत्ति 1:28 में पहले देखा, परमेश्वर ने मनुष्य को उसके अधीनस्थ राजा या सेवक राजा के रूप में नियुक्त किया और उसे उसकी ओर से सारी सृष्टि के ऊपर शासन करने का निर्देश दिया।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के आदम के साथ सम्बन्ध में परमेश्वर की परोपकारिता, आदम के निष्ठावान् रहने की शर्त, और आदम की आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणाम भी सम्मिलित हैं। हम कुछ ही क्षण में वाचा के इन तत्वों के ऊपर ध्यान देंगे। अभी, हम इस बात को सामने लाना चाहते हैं कि इन तत्वों की उपस्थिति वाचा के सम्बन्ध के अस्तित्व को प्रदर्शित करता है।

एक और बात, आदम के साथ परमेश्वर की वाचा का सम्बन्ध नूह के वृतान्त में पुन: दोहराया गया है। उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने नूह से कहा:

> **परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ (उत्पत्ति 6:18)।**

यहाँ पर शब्द "बाँधता" को इब्रानी क्रिया कुम से भाषान्तरित किया गया है। यह किसी पहले से *अस्तित्व* में वाचा की पुष्टि के लिए उपयोग होने वाला सामान्य शब्द है। एक नई वाचा की स्थापना के लिए सामान्य क्रिया का शब्द *काराथ* है।

इसलिए, जब परमेश्वर ने कहा कि वह अपनी वाचा को नूह के साथ "बाँधेगा," तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह नूह के साथ उस वाचा के सम्बन्ध की पुष्टि करेगा जो पहले से अस्तित्व में है। और उत्पत्ति में आदम के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध ही ऐसा था जो यहाँ पर पुन: प्रगट होता जान पड़ता है। आदम की वाचा के संदर्भ में होशे की व्याख्या पुष्टि करती है। आप होशे 6:7 को स्मरण कर सकते हैं जो कहता है:

> **परन्तु उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया – उन्होंने वहाँ मुझ से विश्वासघात किया है (होशे 6:7)।**

इसके अतिरिक्त, यिर्मयाह 33:20, 25 एक ऐसी वाचा की उदधृत करती है जो स्वयं सृष्टि को ही बाँध देती है। इस वाचा को सृष्टि किए जाने वाले सप्ताह में बनाया जाना प्रगट होता है, और यह स्वाभाविक ही आदम और हव्वा को परमेश्वर के अधीनस्थ राजा के रूप में सम्मिलित करती है।

आदम के साथ परमेश्वर ने एक वाचा को बाँधा का एक और प्रमाण यह है कि आदम के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध मसीह के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध के सामान्तर है। पौलुस ने रोमियों 5:12-19 में इसके विषय में बहुत

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विस्तृत रूप से लिखा है। और मसीह के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध एक वाचा का था। यह सच्चाई निरन्तर इब्रानियों 7-13 में दोहराते हुए प्रगट होता है। और स्वयं यीशु इसका उल्लेख अन्तिम भोज के समय करता है। लूका 22:20 में, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा:

यह कटोरा मेरे उस लहू में, जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है (लूका 22:20)।

यह स्वीकार करते हुए, जैसा कि हमने पहले ही कह दिया है, कि मूसा ने आदम के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध का वर्णन करने के लिए शब्द *बिरीथ* का उपयोग नहीं किया। परन्तु जो कुछ हम कहते हैं उसके विपरीत, हम विश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर और आदम के मध्य में हुए प्रबन्ध ने एक वाचा के सारे गुणों को साझा किया। और ऐतिहासिक रूप से, धर्मवैज्ञानिक इससे सहमत होने का झुकाव रखते हैं। उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्री परमेश्वर और आदम के मध्य में बाँधी गई वाचा को अक्सर "आदम की वाचा" कह कर पुकारते हैं, क्योंकि आदम उसके लोगों का प्रधान, और वाचा का पहला मानवीय प्रशासक था। उन्होंने इसे "जीवन की वाचा" कह कर भी पुकारा है, क्योंकि यदि आदम इसे न तोड़ता तो इसका परिणाम शाश्वतकाल का जीवन हो सकता था। उन्होंने इसे "सृष्टि की वाचा" भी कह कर पुकारा है क्योंकि यह सृष्टि किए जाने वाले सप्ताह में बाँधी गई थी और पूरी सृष्टि की अर्थ व्यवस्था को संभाले रखने वाले अर्थ इसमें निहित हैं। और उन्होंने इसे "कार्यों की वाचा" कह कर पुकारा क्योंकि इसने मनुष्य को कार्यों की आज्ञाकारिता की शर्ते के ऊपर जीवन की प्रतिज्ञा की।

उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों में "कार्यों की वाचा" को एक प्रशासन के रूप में संकेत दिया गया है जिसमें परमेश्वर आदम के पास आया और उससे उत्पत्ति 2 में कहा कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को न खाए, क्योंकि जिस दिन वह उस फल को खाएगा उसी दिन अवश्य ही वह मर जाएगा। कार्यों की वाचा ने आदम के लिए जीवन और मृत्यु को अपने में थाम लिया था। यदि आदम परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता करता है तब इसका परिणाम मृत्यु में होगा। यदि आदम ने परमेश्वर की आज्ञापालन की होती, परमेश्वर की आज्ञाकारिता में बना रहता, जैसा कि उसने नहीं किया, तब निश्चित किया हुआ जीवन ही इसका परिणाम था। और आदम एक प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति था, जैसा कि पौलुस रोमियों 5 और 1 कुरिन्थियों 15 में शिक्षा देता है। हमारे कहने का अर्थ यह है कि जब आदम आज्ञापालन करता या अनाज्ञाकारिता करता, और इस घटना में उसने अनाज्ञाकारिता की, उसने ऐसा अपनी भावी पीढ़ी के लिए किया, इस कारण जब उसने पाप किया, तो मृत्यु इस संसार में आ गई, उसका पाप उसकी भावी पीढ़ी के लिए भी गिना गया और इस कारण उन पर भी मृत्यु आ गई।

- डॉ. गाए वॉटरर्स

हम आदम के साथ परमेश्वर की बाँधी गई वाचा को वाचाओं के तीन मूल गुणों के सदंर्भ में देखेंगे जिसका उल्लेख हमने पहले किया था। सर्वप्रथम, हम मनुष्य के प्रति परमेश्वर की परोपकारिता को देखेंगे। दूसरा, हम आदम और उसकी जाति से परमेश्वर द्वारा निर्धारित मानवीय निष्ठा की शर्त को जाँच करेंगे। और तीसरा, हम मनुष्य की आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों के ऊपर ध्यान देंगे। आइए परमेश्वर की ईश्वरीय परोपकारिता के साथ आरम्भ करें।

ईश्वरीय परोपकारिता

परमेश्वर की परोपकारिता उसकी सृष्टि के प्रति उसकी व्यक्त की गई भलाई और दयालुता है, जैसे कि उत्पत्ति 1, 2 में उसने आदम और हव्वा के लिए अच्छे कार्यों को किया। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में रचा, उन्हें बाकी की सृष्टि के ऊपर अधिकारी की पदवी तक ऊपर उठाया। दाऊद ने इस परोपकारिता को भजन संहिता 8:4-6 में जाने पहचाने शब्दों में लिखा है:

तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है। (भजन संहिता 8:4-6)।

जब दाऊद ने प्रश्न किया, "कि मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे?" तो वह यह स्वीकार कर रहा था कि मनुष्य के ऊपर इस तरह का ध्यान दिए जाने उचित नहीं है जिसे हमने परमेश्वर से प्राप्त किया है। और दाऊद विशेषकर आदम और हव्वा और उनके वंशज को सृष्टि के ऊपर दिए हुए अधिकार की परमेश्वर की परोपकारिता से प्रभावित था।

एक और तरीका जिसमें परमेश्वर ने मनुष्य के साथ आरम्भिक वाचा में अपनी परोपकारिता को व्यक्त किया वह उसे आश्रय और जीविका प्रदान करना है। विशेष रूप से, जैसा कि हम उत्पत्ति 2:8 से शिक्षा पाते हैं, उसने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रहने की अनुमति दी और साथ उनके लिए भोजन का प्रबन्ध किया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। उत्पत्ति 1:29 में परमेश्वर ने आदम से कहा:

सुनो, जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं (उत्पत्ति 1:29)।

परमेश्वर की वाचा की परोपकारिता पूरी तरह आदम के पाप में गिर जाने के पश्चात् भी प्रदर्शित हुई। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम को चेतावनी दी थी कि मनुष्य मर जाएगा यदि वे उसकी व्यवस्था को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने के द्वारा तोड़ देते हैं। परन्तु जब उन्होंने इसे खा लिया, तो वे नहीं मरे – कम से कम भौतिक रूप में। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ने उनके छुटकारे के लिए एक मार्ग का प्रबन्ध किया, और उन पर अपने बचाने वाले अनुग्रह को उण्डेल दिया। और वह इस अनुग्रह को उसके लोगों के ऊपर पीढ़ी दर पीढ़ी, प्रत्येक उस को दिखाता चला जाता है जो पाप से पश्चाताप करता और मुक्ति के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है।

उत्पत्ति 1 और 2 में, परमेश्वर ने मनुष्य के लिए सब कुछ की रचना की; न केवल आदम और हव्वा के लिए, अपितु उसके वंशज के लिए भी। [वास्तव में], पतन के पश्चात्, सारी मनुष्य जाति निरन्तर आरम्भिक सृष्टि का आनन्द ले रही है। इससे भी ज्यादा जो बात और भी ज्यादा आश्चर्य में डाल देती है वह यह है कि जब [हमारा], प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी के ऊपर चला फिरा, बहुत सी बातें जिसकी उसने घोषणा की, जिसका उसने प्रचार किया, और जिसके उसने उदाहरण दिए वह [भी], उत्पत्ति 1 और 2 में पाए जाते हैं [जैसे], उन तारों को जिन्हें उसने [आकाश में], देखा, जिसने उसकी आराधना के लिए ज्योतिषियों का मार्गदर्शन किया। और जब उसने लोगों में प्रचार किया, तो उनसे विशेष रूप से पक्षियों का उल्लेख किया जो न तो बोते न ही काटते हैं। यह सारे के सारे उसके प्रचार के उत्तम दृष्टान्त बन गए। यह भी हमें सोचने पर मज़बूर कर देता है जब प्रभु भविष्य में पुन: आएगा, तो महिमामयी ज्योति जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के ऊपर प्रगट होगी, वह पहले से ही आश्चर्यजनक तरीके से उत्पत्ति में उल्लेख की हुई है, [क्योंकि], परमेश्वर ने इन्हें आरम्भ में ही रच दिया था। मैं विश्वास करता है कि कई कारणों में से एक यह है कि परमेश्वर ने इन वस्तुओं को आरम्भ में इस ही विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए रच दिया था।

- रेव्ह. पीटर लियू, अनुवादित

परमेश्वर की ईश्वरीय परोपकारिता की इस समझ को अपने ध्यान में रखते हुए, आइए हम मनुष्य की उसकी वाचा के प्रति निष्ठा की शर्तों की ओर मुड़ें।

मानवीय निष्ठा

मानवीय निष्ठा के लिए परमेश्वर की शर्तों को प्रगट करने के लिए, धर्मशास्त्री अक्सर उत्पत्ति 2:17 की ओर इंगित करते हैं, जहाँ पर परमेश्वर ने आदम को आदेश दिया कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल से न

खाए। और जबकि यह सत्य है कि यह परमेश्वर के प्रति निष्ठा की शर्तों का एक अंश था, उसके आदेश निषेध की हुई इस एक बात से कहीं बहुत आगे की ओर थे।

इन दायित्वों का वर्णन करने के लिए धर्मशास्त्रियों के पास भिन्न तरीके हैं, परन्तु अधिकांश कहते हैं कि आदम ने परमेश्वर की ओर से पूर्ण नैतिक व्यवस्था को प्राप्त किया था, जिसे बाद में दस आज्ञाओं में संक्षिप्त कर दिया गया है। उदाहरण के लिए, 1947 में पूरे होने वाले, *वेस्टमिन्स्टर विश्वास वचन-अंगीकार* अध्याय 19 के, भाग 1 और 2 में आदम के दायित्वों को इस तरह से वर्णित करता है:

> **परमेश्वर ने आदम को एक व्यवस्था, "कार्यों की वाचा" रूप में दी, जिसके द्वारा उसने उसे और उसकी भावी पीढ़ी को व्यक्तिगत् रूप से, पूरी तरह, सटीक और सदैव की आज्ञाकारिता के लिए बाँध दिया...यह व्यवस्था, पतन के पश्चात्, निरन्तर धार्मिकता के लिए सिद्धतापूर्ण नियम रहा है; और यही सीनै पर्वत के ऊपर, दस आज्ञाएँ में लोगों को परमेश्वर के द्वारा दी गई थी।**

इस अध्याय में, हम हमारे जाँच को उन दो तरह की मानवीय निष्ठा तक ही सीमित रखेंगे जिनकी मांग परमेश्वर करता है। सर्वप्रथम, परमेश्वर ने आदम और हव्वा के ऊपर याजकीय दायित्वों को रख दिया। और दूसरा, उसने उन्हें बाकी की सृष्टि के ऊपर शासन करने के लिए राजकीय दायित्व दे दिए। आइए सबसे पहले मनुष्य के याजकीय दायित्वों को देखें।

याजकीय दायित्व

अदन की वाटिका में आदम की याजकीय भूमिका दोनों बातों में दिखाई देती है क्योंकि वाटिका ने एक पार्थिव मन्दिर का कार्य किया, और क्योंकि आदम और हव्वा ने याजकों का कार्य किया। एक मन्दिर या पवित्रस्थान होने के कारण, वाटिका मिलाप के तम्बू और बाद में मन्दिर का पूर्ववर्ती था। सच्चाई तो यह है, कि मिलाप के तम्बू की सजावट और सामान ने कई धर्मशास्त्रियों को यह निष्कर्ष निकालने में मार्गदर्शन दिया है कि यह वास्तव में अदन की वाटिका की प्रतिकृति थी। मिलाप के तम्बू की दीवट वाटिका के जीवन के वृक्ष के सदृश था। करूब जिनसे मिलाप के तम्बू के परदे और वाचा के सन्दूक की सजावट की गई थी उन करूबों को स्मरण दिलाते हैं जिन्हें उत्पत्ति 3:24 में अदन की वाटिका की पहरेदारी के लिए नियुक्त किया गया था।

और ठीक वैसे ही जैसे अदन की वाटिका मिलाप के तम्बू और मन्दिर का पूर्ववर्ती था, आदम और हव्वा उन याजकों के पूर्ववर्ती थे जिन्होंने उन पवित्र भवनों में सेवकाई की थी। उदाहरण के लिए, परमेश्वर उत्पत्ति 3 में चला फिरा और आदम और हव्वा से वार्तालाप किया। लेवीय 16 के अनुसार, परमेश्वर ने बाद में अपनी उपस्थिति को मात्र उसके महा याजक को, और मात्र उसके मिलाप के तम्बू और मन्दिर के महा पवित्र स्थान में ही प्रगट किया। जिन कार्यों के लिए आदम की नियुक्ति वाटिका में की गई वह भी उसके याजकीय कार्य की ओर संकेत देती है, क्योंकि उनका वर्णन उस जैसी ही तकनीकी भाषा के साथ किया गया है जिस भाषा के साथ याजक के कार्य का मिलाप के तम्बू के लिए किया गया था। उत्पत्ति 2:15 में, हम पढ़ते हैं:

> **तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)।**

इब्रानी भाषा के क्रिया शब्द *अवाद*, का अर्थ "काम," और "शामार" का अर्थ यहाँ पर "रक्षा करने" के लिए भाषान्तरित किया गया है, जो कि दोनों ही अपेक्षाकृत सामान्य हैं और कई बातों का अर्थ दे सकते हैं। परन्तु इकट्ठे हो कर दोनों ही एक ऐसे तकनीकी वाक्यांश का निर्माण करते हैं जो याजकीय कार्य का विवरण देता है। उदाहरण के लिए, गिनती 3:8 मे, हम पढ़ते हैं:

> **[लेवीय] मिलापवाले तम्बू के कुल समान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें (गिनती 3:8)।**

सृष्टि के वृतान्त में, आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूप में न केवल शासन करने और इसे अधीन करने, अपितु उसका प्रतिनिधित्व भी करने के लिए भी रचा गया है। उन्हें वास्तव में, इस्राएल की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

याजकीय भूमिका की तरह – जिसमें याजक परमेश्वर और मानव के मध्य में प्रतिनिधि, बिचवई या उनके-मध्यस्थ के रूप में थे – इसलिए आदम और हव्वा को अक्षरश: उन्हीं कामों को करने के लिए रचा गया था। उन्हें शासन करना, सेवा करनी, आज्ञापालन करना था, और इस प्रकार पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना था, जो कि ठीक वही कार्य है, जब आप कुलपतियों के इतिहास का, जब आप इस्राएल की जाति और तोराह का, जब आप नए नियम का, और महान् आदेश का या प्रेरितों के काम 1:8 में गवाह ठहरने के लिए आत्मा का उनके ऊपर आने का अध्ययन करते हैं, तो यह सब कुछ आदम और हव्वा की सृष्टि को परमेश्वर के स्वरूप और परमेश्वर की समानता में बनाए जाने में, न केवल उसके जैसे शासन करने अपितु यह दिखाने में वह कैसा है, निहित हैं जो कि एक याजक की मूल भूमिका होती है।

- प्रोफ. जेफरी ऐ. वोलमर

परमेश्वर की आदम के साथ बाँधी गई वाचा, आज भी, पूरी मनुष्य जाति के साथ बँधी हुई है। इसलिए, मनुष्य आज भी नैतिक दायित्वों को पूरा करने के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह है जो कि इन याजकीय कर्तव्यों में निकल कर आते हैं। उदाहरण के लिए, हम सभी को परमेश्वर की सेवा और उसकी आराधना करने, उसकी सृष्टि पर खेती करने और उसकी रक्षा करने, और उसके सारे संसार को एक पवित्रस्थान में परिवर्तित कर देने जिसमें परमेश्वर की उपस्थिति सही रूप से वास कर सके के लिए बुलाया गया है। और कलीसिया में, परमेश्वर ने हमें अतिरिक्त दायित्व दिए हैं, जैसे कि स्तुति के बलिदानों को चढ़ाना और उसकी आज्ञा का पालन करना, और इस संसार में उसकी भलाई की घोषणा करना। जैसा कि पतरस ने 1 पतरस 2:5,9 में कलीसिया से बोला था:

तुम... आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ... [तुम] एक चुना हुआ वंश, और राज- पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो (1 पतरस 2:5,9)।

आदम और हव्वा के दायित्वों को मानवीय निष्ठा के संदर्भ में देख लेने के पश्चात्, आइए राजकीय दायित्वों के ऊपर विचार विमर्श करें।

राजकीय दायित्व

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले ही देख लिया है, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने बदले में उसकी सृष्टि के ऊपर नियुक्त किया। और उसने उन्हें मानवजाति को बढ़ाने का आदेश दिया ताकि वह इस पूरी पृथ्वी पर शासन करने के लिए भर जाए। यह मनुष्य का राजकीय दायित्व था। आइए एक बार फिर से उत्पत्ति 1:28 में मनुष्य को दिए हुए परमेश्वर के आदेश को सुनें:

फूलो- फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:28)।

अब, उत्पत्ति 1 में दिए हुए "स्वरूप" और "समानता" के शब्दों की भाषा को समझने के लिए कई तरीकों में से एक सबसे सामान्य यह है कि परमेश्वर ने हमें उसके प्रतिनिधि होने के लिए और उस सृष्टि में उसके शासन के रूप में खड़े होने के लिए रचा है। और हम इसे व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ से रेखांकित कर सकते हैं जब मूसा अपने रचनाओं को लिख रहा था, जहाँ पर "स्वरूप" और "समानता" को अक्सर फिरौन और राजाओं के लिए उपयोग किया जाता था, और ऐसा कहने का अर्थ है कि फिरौन "देवता के स्वरूप" के ऊपर रचा गया था, का अर्थ है कि वह उस विशेष संदर्भ में परमेश्वर का प्रतिनिधि है...मुझे लगता है कि यह ध्यान देने के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण बात है कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 2 में आदम और हव्वा को वाटिका में नहीं रखा था और तब यह नहीं कहा था कि मैं नहीं जानता, बस केवल घास में लेट जाना और बादलों को गिनते रहना, यहाँ निकट की भेड़ों को देखते रहना। ठीक है न? उसने उन्हें वाटिका में करने के

लिए एक कार्य और एक उद्देश्य दिया था। ठीक है न? वह उन्हें वहाँ इसकी देखभाल के लिए रखता है और वाटिका की रक्षा के लिए रखता है, इस कारण सृष्टि के साथ कार्य करने का यह व्यवसाय, सृष्टि की देखभाल करना, इसके आकार देना और इसका निर्माण करना ताकि यह ऐसी सृष्टि बन जाए जिसे परमेश्वर चाहता है, वास्तव में, एक ऐसी सृष्टि, जिसमें सारी की सारी सृष्टि फलती-फूलती है। यह है वह कार्य जिसका अर्थ मनुष्य है। इस तरह से परमेश्वर ने हमें रचा कि हम इस सृष्टि में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करें जिसे परमेश्वर ने हम में रख दिया है।

- डॉ मार्क कोर्टज़

स्वर्ग के महान् राजा ने मनुष्य को उसके राजकीय अधीनस्थ अधिपति के रूप में उसके राज्य की सीमाओं को अदन की वाटिका में उनके रहने की आरम्भिक सीमाओं से आगे विस्तार करने के लिए नियुक्त किया था। उसका उनके लिए लक्ष्य बढ़ने का, फैलने का, और उसकी सम्पूर्ण पृथ्वी की देखभाल उसी तरह से करने का था जैसे उन्होंने वाटिका की देखभाल की थी। आख़िरकार, मनुष्य को *सम्पूर्ण* पृथ्वी को उसके स्वर्गीय राज्य के विस्तार करते हुए परमेश्वर के पार्थिव पवित्रस्थान में परिवर्तित कर देने की थी। और यह अभी भी आज हमारा दायित्व है। मत्ती 6:10 में प्रभु की प्रार्थना में, यीशु ने हमें ऐसे प्रार्थना करना सिखाया:

तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10)।

यह सदैव से ही मनुष्य का कार्य रहा है कि वह परमेश्वर को उसके स्वर्गीय राज्य को इस पृथ्वी पर विस्तार करने में सहायता करे। हमारे लिए प्रार्थना में यीशु के निर्देशों में यह प्रतिबिम्बित होता है। और यह कार्य विशेषकर कलीसिया में उसके विश्वासयोग्य लोगों के ऊपर आ जाता है। हमें हमारे प्रत्येक कार्य में राज्य के इस पहलू को देखना चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी के ऊपर दिया है। और हमें हमारे सारे कौशल और सारे संसाधनों का उपयोग उसकी सृष्टि की देखभाल और रक्षा करने के लिए उपयोग करना चाहिए। चाहे हम हमारे घर पर हों, कार्यों पर हों, कलीसिया में हों, या कहीं भी अन्य स्थान पर हों, जो कुछ भी हम करते हैं उसमें महान् राजा की सेवा करने और उसका प्रतिनिधित्व करने की बुलाहट हमें दी गई है।

अब क्योंकि हमने आदम के साथ परमेश्वर के द्वारा बाँधी गई ईश्वरीय परोपकारिता, और मानवीय निष्ठा की शर्तों को देख लिया है, इसलिए, आइए हम मानवीय आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करें।

परिणाम

आदम के साथ परमेश्वर की बाँधी हुई वाचा में मनुष्य के लिए आशीषों की प्रतिज्ञा की गई है यदि वह उसे निष्ठा दिखाता है, और श्राप यदि वह उसे निष्ठाहीनता को दिखाता है। और जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख कर दिया है, अनाज्ञाकारिता का परिणाम मृत्यु था। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम से कहा:

पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

अब, प्राचीन इब्रानी कानूनी ग्रंथ सामान्यतया अधिकतम दण्ड जिसे किसी को भी दिया जा *सकता* है, अपेक्षाकृत अनिवार्य दण्ड होता है जो किसी के ऊपर लागू *किया* जाता था। परन्तु चाहे उत्पत्ति 2:17 में परमेश्वर के शब्द अधिकतम दण्ड के लिए कहे गए हों या अनाज्ञाकारिता के लिए अनिवार्य दण्ड के लिए, परमेश्वर की वाचा के प्रति मनुष्य की अनाज्ञाकारिता के गंभीर परिणाम निकलते हैं। स्पष्ट रूप से, हमारे प्रथम माता पिता मृत्यु को पाने के ही योग्य थे।

आदम और हव्वा के पाप के परिणामों में से एक यह था कि वह परमेश्वर के न्याय की अधीनता में आ गए, इस तरह की न्यायिक मृत्यु की पीड़ा के अधीन हो गए जिसका उल्लेख हमने पहले कर दिया है। और आत्मिक जीवन और मृत्यु के ऊपर रोमियों 8:10 में पौलुस की शिक्षा इंगित करती है कि वे आत्मिक रूप से मर गए, और वह अपने सारे स्वाभाविक वंशजों को इसी दुर्भाग्य के दण्ड के अधीन में ले आए। इसके अतिरिक्त, जैसा कि हम उत्पत्ति

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

3:22-24 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने उन्हें अदन की वाटिका से अपनी उपस्थिति में से बाहर निकाल दिया। और क्योंकि उनके पाप के कारण, सृष्टि स्वयं भ्रष्टता के बन्धन में बँध गई।

आदम के पाप के प्रभाव ने, मूल रूप से बुराई के दरवाजे को खोल दिया। उनके पाप के कारण बुराई इस संसार में आ गई, और इसके परिणामस्वरूप, प्रत्येक वस्तु बुराई से संक्रमित हो गई, प्रत्येक वस्तु बुराई के कारण कमजोर हो गई, और विशेषकर, बुराई के कारण परमेश्वर के उद्देश्य अपनी पटरी से नीचे उतर गए। इस तरह , इसने मनुष्य को, हमारे शरीरों को, हमारी बुद्धि को प्रभावित कर दिया। इसने सृष्टि के पूरे ताने बाने को ही प्रभावित कर दिया इसलिए यह, जैसा कि रोमियों 8 कहता है, कि कहरती और पीड़ाओं में पड़ी हुई अपने छुटकारे की बाट जोहती है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि तर्क संगत रूप से, मनुष्य होने के नाते यह हमारे एक दूसरे के साथ के सम्बन्धों को, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण, यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करती है...और इस तरह से, बुराई एक समस्या बन जाती है जिसका समाधान किये जाने की आवश्यकता है। और जबकि बुराई के दरवाजे को खोलने के लिए केवल एक ही कार्य अनाज्ञाकारिता का हुआ, यह मानो किसी एक गुत्थी को सुलझाने जैसा है। बुराई को कम आंकना एक बहुत ही बड़ा कार्य है, जो सृजी हुई व्यवस्था में बड़ी गहराई के साथ पैठ गई है। इसलिए आदम और हव्वा के पाप के इस कार्य के लिए बाइबल में केवल थोड़ी सी पंक्तियाँ मिलती हैं, परन्तु इसके समाधान के लिए हज़ारों पृष्ठों की आवश्कता होती है।

- डॉ टिम फोस्टर

मनुष्य के पाप के गंभीर परिणामों के होने पर भी, परमेश्वर ने तुरन्त हमारे प्रथम माता-पिता को नाश नहीं कर दिया; उसने उन्हें भौतिक रूप से जीवित ही छोड़ दिया। और इससे भी अधिक, परमेश्वर ने उन पर पाप की नई स्थिति में अपनी परोपकारिता का विस्तार किया। उदाहरण के लिए, उसने उनमें आत्मिक जीवन को अस्पष्ट रूप से, इस अनुमान का प्रमाण और उत्पत्ति 4:1, 25 में हव्वा के द्वारा विश्वास के व्यक्त किए जाने के साथ पुन: स्थापित किया कि वे उनकी सन्तान का पालन पोषण विश्वास में करेंगे। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने उनके पाप के *सभी* परिणामों से बचने के लिए एक उद्धारक भेजने की प्रतिज्ञा की। यह प्रतिज्ञा सर्प को दिए हुए परमेश्वर के श्राप में प्रगट होती है, जिसने हव्वा को निषेध फल खा लेने के लिए धोखा दिया था। उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर के सर्प को कहे हुए शब्दों को सुनिए:

और मै तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।

उद्धारक आख़िरकार मसीह होगा, जो अपनी वाचा को पूर्णता के साथ पूरा करेगा, परमेश्वर की आशीषों को कमा लेगा, और छुटकारा पाए हुओं के साथ बड़ी कृपा के साथ उनको साझा करेगा।

अब, आदम और हव्वा का उत्पत्ति में दिया हुआ इतिहास स्पष्ट रूप से आदम की वाचा की सारी आशीषों का वर्णन नहीं करता है। परन्तु उत्पत्ति 1:22, 28 का तात्पर्य फलने-फूलने और इस पृथ्वी को अपने अधीन कर लेने का है जो अपने स्वयं में आज्ञाकारिता की आशीषें हैं। यह विचार बाद में पवित्रशास्त्र के द्वारा पुष्टि सन्तान की आशीष की सीमा तक किए गए हैं, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 7:14 और इस पृथ्वी पर शासन करने की आशीष, जैसा कि 2 तीमुथियुस 2:12 में मिलता है।

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति 3:22-23 में आदम और हव्वा का वाटिका से निष्कासन की मंशा, कम से कम आंशिक रूप से, जीवन के वृक्ष तक उन्हें पहुँचने से रोकना था। यदि वे आज्ञाकारी ही रहते, तो वह इसके फल को खाने के योग्य होते, जो उन्हें सदैव के लिए परमेश्वर की संगति और उसकी तत्काल उपस्थिति में रहने के योग्य बना देता। इस तरह से, हम सार निकाल सकते हैं कि शाश्वतकाल के जीवन में उनकी आज्ञाकारिता की आशीषें हैं। और यह निष्कर्ष रोमियों 5:12-19 के द्वारा सुदृढ कर दिया जाता है, जो यह शिक्षा देता है कि यीशु ने जीवन को वहाँ सफलता से प्राप्त किया जहाँ पर आदम असफल हो गया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसके अतिरिक्त, क्योंकि आदम मनुष्य जाति के लिए बाँधी गई वाचा का प्रधान था, उसकी निष्ठा या निष्ठाहीनता का परिणाम सारी मनुष्यजाति के लिए जीवन और मृत्यु के विषय थे। दुर्भाग्य से, आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन रहे, जिसके परिणामस्वरूप वे और उनके सारे सामान्य या स्वाभाविक वंशज पाप, पतन और मृत्यु की अधीनता में आ गए। परन्तु परमेश्वर की ईश्वरीय परोपकारिता अभी भी प्रभाव में है, और इसने प्रतिज्ञात् उद्धारक यीशु मसीह के माध्यम से बचने के एक मार्ग का प्रबन्ध किया।

सारांश

इस अध्याय के आरम्भ में मनुष्य कैसा था, में हमने मनुष्य की सृष्टि को बाइबल आधारित वृतान्तों और उनकी ऐतिहासिकता, और बाकी की सृष्टि के ऊपर मनुष्य की प्रधानता के संदर्भों में देखा। हमने साथ ही हमारी बनावट को भौतिक शरीरों और अभौतिक प्राणों के रूप में बने हुए होने को देखा। और हमने मनुष्य के परमेश्वर के साथ आरम्भिक वाचा के सम्बन्ध को उसकी ईश्वरीय परोपकारिता, उस मानवीय निष्ठा को जिसकी वह मांग करता है, और आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों के संदर्भों में ध्यान दिया है।

सृष्टि के समय मनुष्य में परमेश्वर की ओर से निवेश की गई गरिमा और सम्मान के बारे में सोचना आश्चर्यजनक है। स्पष्ट है, कि पाप ने हमारे लिए बहुत ही गंभीर समस्याओं को उत्पन्न कर दिया। परन्तु मनुष्य के लिए परमेश्वर की रूपरेखा की जानकारी उस पाप के ऊपर विजय पाने, और मनुष्य की पुन: स्थापना, और बाकी की सृष्टि को उसकी इच्छित महिमा पाने के लिए उसकी योजना की ओर ले जाने का एक महत्वपूर्ण प्रथम कदम है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम